भारतीय धर्मशास्त्र में पर्यावरण की अवधारणा

* डॉ. नरेन्द्र उपाध्याय, ** प्रो. आशीष श्रीवास्तव

आदि मानव प्रकृति के अन्य जीवों की तरह अपने को प्रकृति का अंग मानता था व है भी यह संसार प्रत्येक जीव मात्र को जीने का उतना ही अधिकार देता है जितना एक मनुष्य को–मानव को, किन्तु कालातन्र में मनुष्य ने यह सोचना आरंभ कर दिया कि वह संसार के अन्य जीव प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ है। मानव की इसी स्वार्थी भावना ने पर्यावरण संकट को जन्म दिया जिसका परिणाम आज मानव जीवन ही संकट में पड़ गया भविष्य में मानव को जीवन जीने के लिए शायद ही पर्याप्त पानी, वायु आदि मिल सके। भारत जैसे विकासशील देश में पर्यावरण प्रदूषण गरीबी के कारण हैं, जबकि विकसित देशों में पर्यावरण प्रदूषण अमीरी के कारण है। हमने गरीबी दूर करने के लिए औद्योगिक विकास का रास्ता अपनाया, क्योंकि गरीबी दूर करने के लिए इसके अलावा अन्य कोई उपाय नहीं था, अग्रसर होने के लिए भारत को अनेक प्रकार की गंभीर समस्याओं और परिस्थितियों से जूझना पड़ा। इसके कारण भारत की विधि का शासन प्रणाली में पर्यावरण विधि के विकास को आर्थिक विकास एवं पो णीय विकास में समन्वय स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक था। विधि वहाँ बेहतर पर्यावरण का साधन व साध्य बन जाती जहाँ तथ्य विधि शासित समाज का एक प्रतिनिधि के रूप में हो। प्राचीन भारत में पर्यावरण संरक्षण लोगो की दिनचर्या का एक अंग था, जहाँ वह कला, संस्कृति, धर्म, लोक परम्परा में प्रतिविम्बित होता था। हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म ग्रन्थों में पर्यावरण संरक्षण एक परमार्थ विद्या के रूप में स्वीकार किया गया। धर्मशास्त्रों में पेडों, नदियों व आराध नाओं को धार्मिक कृत्य एवं संस्कार माना गया जैसे –

1. ऋग्वेद–ऋग्वेद में प्रकृति की शक्ति की जलवायु के नियंत्रण, उर्वरता में वृद्धि तथा मनुष्य के विकास व उनकी अंतरग नातेदारी के लिए महत्वपूर्ण माना गया है। ऋग्वेद में प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं के महत्व का विवरण दिया गया है। जिसमें पर्यावरण को संरक्षण मिलता है।

2. अथर्ववेद–इसमें पेडों को विभिन्न देवी–देवताओं के निवास का स्थान माना गया है।

3. यजुर्वेद–यजुर्वेद में जानवरों एवं प्रकृति के साथ मनुष्य को पारस्परिक संबंध प्रभुत्व और अधीनता वाले न मानकर आदर एवं दयालुता के रूप में माना गया है। महाराष्ट्र में कहा गया है कि आम के पेड़ में पानी देने से हमारे पूर्वज प्रसन्न होते हैं, विषणु धर्म पुराण में कहा गया है कि तुम वृक्ष रोपते हो तो वह अगली पीढ़ी में तुम्हारा पुत्र होगा। इसी प्रकार से मुस्लिम धर्म में निम्न बाते पर्यावरण संरक्षण को प्रतिपादित करती हैं–

1. व्यर्थ में किसी का खून मत बहाओ किसी चीज को खत्म मत करो। 2. हमने कुछ चीजें आप पर हलाल की हैं तो कुछ चीजें हमाल की हैं। हलाल चीजों को भी उतना ही काम में लो जो जितना जरूरी है अनावश्यक खर्च मत करो। 3. कयामत के दिन खुदा तुमसे हिसाब पूछेगा जिसमे हवा पानी भी शामिल है।

इस प्रकार से इस्लाम 'हम' का मजहब है। एक व्यक्ति का नहीं अतः इसमें परोपकार पर विशेष ध्यान दिया गया है। शरीर के लिए नहीं आत्मा के लिए जिओ यही अन्तिम लक्ष्य है। इसी प्रकार से जैन धर्म में 'जियो और जीन दो' का सिद्धांत प्रख्यात है। विश्व के सभी धर्म इसी सिद्धांत को मान्य करते आ रहे हैं।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि धर्म एवं आध यात्म भी पर्यावरण को संरक्षण देने हेतु प्रेरित करता है व इस बात का समर्थन भी करता है कि जलवायु पर्यावरण का विनाश मानव जाति का विनाश होगा। पर्यावरण की तुलना समता प्रकृति से की जाती है जिसके अन्तर्गत पृथ्वी जल वायु व आकाश हैं जो समस्त चर अचर जीवों के आधार हैं। भारतीय आध्यात्म में प्रकृति विष्णुमय है भगवान विष्णु ही जाति के पालक हैं।

जले विष्णुः स्थले विष्णु विष्णु पर्वत मस्तके।
ज्वालमाला कुले विष्णुः सर्व विष्णु मयं जगत्।।

जल रूप विष्णु है पृथ्वी रूप विष्णु है, पहाड़ का मस्तक विष्णु है, अग्नि में विष्णु है, सारा जगत विष्णु मय है अर्थात संसार का पालनकर्ता विष्णु है। इस प्रकार से पर्यावरण की रक्षा करना धर्म था क्यों कि धर्मः रक्षति रक्षितः। भारतीय समाज में हम प्रक ति के पदार्थो की पूजा व सम्मान किया करते थे क्यों कि धर्म अनुसार ईश्वर आत्मा में व्याप्त है। हमारे देवी देवताओं के वाहन पशु पक्षी होते थे जिनके कारण पशु पक्षियों का संरक्षण व पूजा अर्चना होती रही है। वर्तमान में भी माँ दुर्गा का वाहन सिंह पूज्य है, गणेश जी का वाहन चूहा पूज्य है व दीपावली पर गोर्वधन की पूजा में पशुधन की पूजा की जाती है। भारतीय धर्मशास्त्र में यज्ञ का बड़ा महत्व था जो देवी–देवताओं की पूजा के लिए किया जाता था। यजुर्वेद के अनुसार यज्ञ में जो घी एवं अन्य सामग्री की

* प्राध्यापक विधि एवम् विभागाध्यक्ष, शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय दतिया (म०प्र०)
** सहायक प्राध्यापक विधि अतिथि विद्वान एवम् शोधार्थी विधि, शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय दतिया (म०प्र०)

आहुति दी जाती थी जिसमें घी व सामग्री सूक्ष्म कणों में विलीन होकर वायुमण्डल में पहुँच कर वायु को शुद्धता प्रदान करते थे। इसी प्रकार से सामवेद के अनुसार यज्ञ की अग्नि से मच्छर व अन्य कीटाणु, कीट पतंगे दूर हो जाते थे। श्रीमद् भागवत गीता के अध्ययन तीन के लोक में कहा गया है कि यज्ञ के अन्न से भूतों की उत्पत्ति होती है। अन्न की उत्पत्ति बादल के पानी से होती है, बादल यज्ञ से होते हैं। इसी प्रकार से मनु स्मृति में कहा गया है कि यज्ञ जैविक विकास का कारण है। ईशावस्योंशनि द में भी पर्यावरण संरक्षण की बात की गई है।

ईशावस्यमिद्म सर्व यात्किजगत्याम जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा ग धा कस्य स्विद् धनम्।।

उपरोक्त युक्ति अनुसार–सर्वशक्तिमान भगवान शंकर संसार की समस्त वस्तुओं में विद्यमान हैं अतः हमरा दृष्टिकोण प्रकृति व प्राकृतिक संसाधनों की ओर सहष्णुता भाई चारे का होना चाहिए स्वार्थ एवं लोभ का परित्याग कर प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण किया जाना चाहिए। इस प्रकार से भारत के धर्म ग्रन्थों में पर्यावरण के संरक्षण पर बल दिया। इसके साथ ही पर्यावरण संरक्षण की चिन्ता ईशा से पूर्व 321 और 300 के बीच से भी उठी थी। इस संबंध में प्राचीन भारतीय विधि एवं अर्थशास्त्र के विद्वान कौटिल्य के द्वारा रचित अर्थशास्त्र में चरणवद्ध तरीके से पर्यावरण का संरक्षण किया गया जिसके अनुसार काटकर गिराये गये पेडों के बारे में दण्ड की मात्रा पेड़ की उपयोगिता एवं उम्र के अनुपात में दण्ड दिये जाने का प्रावधान किया गया था। इस प्रकार से हम देखते हैं कि मनु य जबसे प्रकृति व धर्म से दूर हुआ है तब से ही पर्यावरण प्रदूषण की समस्या बढ़ती जा रही है। यह एक शोध का विषय है कि हमारे धर्म ग्रन्थ व विधियाँ (प्राचीन व आधुनिक) सदियों पर्यावरण के संरक्षण को महत्व देती रही हैं व मानव जाति को धर्म के आधार पर समझाया गया कि प्राक तिक वस्तुओं, जीव, वृक्ष, पौधों में भगवान का वास होता है। इन्हें किसी भी प्रकार से नुकसान या नष्ट न करें किन्तु मनु य जब से धर्म विमुख होने लगा है उसने पृथ्वी को आहत किया, जंगलों का विनाश, पहाडों को नष्ट किया जिसके कारण पर्यावरण संतुलन बिगडने लगा। तभी से मानव जाति के अस्तित्व का प्रश्न उत्पन्न हुआ है।

अतः हम कानून या धर्म को माने व पर्यावरण का संरक्षण करें ताकि हमारी आने वाली सन्ताने/पीढियाँ हमें न कोशे व इस बात का गर्व करें कि हमारे पूर्वजों नें प्राकृतिक संसाधनों का भण्डार एवं स्वस्थ वातावरण दिया है जो हमारी नैतिक परंपरागत उत्तरदायित्व का प्रतीक होगा।

संदर्भ ग्रन्थ-

1. श्रीमद् भागवत गीता।
2. बी.बी. अग्रवाल फॉरेस्ट इन इण्डिया 1985
3. आर.पी. कैंगिल, दि कौटिल्य अर्थशास्त्र पार्ट ᴾᴾ 1972
4. धेरण्ड संहिता उपदेश – 7 लोक 18
5. सचिव पर्यावरण विभाग, भारत सरकार, आर.पी. आनन्द द्वारा सम्पादित लॉ साईंस एवं इनवायरमेन्ट 1987
6. पार्क जी.सी.इकोलॉजी एण्ड एनवायरमेन्ट मेनेजमेन्ट, बटर वर्थ लंदन 1980
7. पर्यावरण विधि –डॉ. जे.जे. आर. उपाध्याय
8. पर्यावरण विधि –डॉ. आर.एल. राठी
9. भारत का संविधान –डॉ. जय जय राम उपाध्याय, सेन्ट्रल ला एजेन्सी इलाहाबाद।
10. भारत का संविधान–डॉ. जे.एन. पाण्डेय, सेन्ट्रल लॉ ऐजेन्सी इलाहाबाद।
11. ओम प्रसाद –पर्यावरण दर्शन 1999
12. राम कुमार गुर्जर : पर्यावरण : प्रबंधन एवं विकास पोईण्टर पब्लिशर्स जयपुर 1997
13. डॉ. मामोरिया एवं सिसौदिया : पर्यावरण एवं विकास साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, आगरा 2007